गन्ना कृषकों की आय में बढ़ोत्तरी हेतु गुड़ प्रसंस्करण एवं प्रशिक्षण इकाई का शिलान्यास

पूर्वी उत्तर प्रदेश विशेषकर गोरखपुर क्षेत्र के किसानांे के लिए गन्ना एक अत्यन्त महत्वपूर्ण नकदी फसल है। इस लोकप्रिय गन्ना फसल की खेती पूर्वी उत्तर प्रदेश के गोरखपुर (बस्ती, गोरखपुर एंव महाराजगंज) एंव देवरिया जोन्स (देवरिया, कुशीनगर, बलिया, आजमगढ एवं मऊ) में क्रमशः 95,000 एवं 1.25 लाख हक्टेयर क्षेत्रफल में कृषकों द्वारा की जाती है, जोकि सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश के गन्ना क्षेत्रफल का लगभग 9 प्रतिशत है। इस क्षेत्र में गन्ने की उत्पादकता 58 टन प्रति हे. है जोकि पश्चिमि उत्तर प्रदेश की गन्ना उत्पादकता (72 टन/हे.) की तुलना में लगभग 19 प्रतिशत कम है। यदि पेड़ी गन्ने की उत्पादकता का आंकलन किया जाए तो इस क्षेत्र की पेड़ी उत्पाकदता लगभग 53 टन/हे. है जोकि पश्चिमी उत्तर प्रदेश की पेड़ी उत्पादकता (72 टन/हे.) से 26 प्रतिशत कम है। राज्य में गन्ने की कम उत्पादकता के अतिरिक्त गन्ने में चीनी रिकवरी भी लगभग 9 प्रतिशत है जो 10-36 प्रतिशत के राष्ट्रीय औसत से काफी कम है।

पूर्वी उत्तर प्रदेश की जलवायु अन्य राज्यों की तुलना में, कम खर्च के साथ अच्छे गुणवत्तायुक्त गन्ना उत्पादन हेतु अत्यन्त उपयुक्त है। लेकिन गन्ने की खेती के सतत् विकास के लिए गुड़ प्रसंस्करण इकाईयों की भी प्रमुख भूमिका होती है। पूर्वी उत्तर प्रदेश के दोनो जोन्स में लगभग 24 चीनी मिलें कार्यरत हैं, जिनमंे से कुछ चीनी मिलें पुरानी तथा अप्रचलित मशीनरी तथा अपर्याप्त कुशलता के कारण पूरी क्षमता से गन्ना-पेराई का कार्य नहीं कर पा रही हैं, तथा गन्ना कृषकों को अन्य कम लाभप्रद फसलों को उगाने के लिए बाध्य होना पड़ रहा है। यदि इस क्षेत्र में पर्याप्त संख्या में उत्तम एवं वैज्ञानिक तकनीकियों से युक्त गुड प्रसंस्करण इकाइयों की स्थापना करा दी जाए एवं साथ ही साथ गन्ना कृषकों के लिए प्रशिक्षण की भी व्यवस्था कर दी जाए तो क्षेत्र के कृषक गन्ने की ज्यादा से ज्यादा खेती करके एवं उसका गुड बना कर अधिक से अधिक आय अर्जित कर सकते हैं।

इसी क्रम मंे माननीय प्रधानमंत्री, भारत सरकार श्री नरेन्द्र मोदी जी एवं माननीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री, भारत सरकार, श्री राधा मोहन सिंह जी की प्रेरणा तथा उनके द्वारा जारी अभियान ‘ आने वाले वर्षों मंे कृषकों की आय दोगुना करने‘ एवं किसानों को आत्मर्भिर बनाने के उद्देश्य से कृषि विज्ञान केन्द्र, भाकृअनुप-भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ एवं भाकृअनुप-कृषि तकनीकी अनुप्रयोग संस्थान, कानुपर द्वारा संयुक्त रूप से महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र,चैक माफी, पीपीगंज (गोरखपुर) में गुड़ प्रसंस्करण

एवं प्रशिक्षण इकाई का शिलान्यास माननीय सांसद, गोरखपुर, परमआदरणीय महंत श्री योगी आदित्य नाथ जी के कर कमलों द्वारा दिनांक 21.12.2016 को विधिवत् सम्पन्न हुआ।

उक्त अवसर पर गोरक्षपीठाधीश्वर एवं सांसद महंत योगी आदित्य नाथ ने कृषि विज्ञान केन्द्र, भाकृअनुप-भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ एवं भाकृअनुप- कृषि तकनीकी अनुप्रयोग संस्थान, कानपुर के सहयोग से स्थापित होने वाले गुड़ प्रसंस्करण एवं प्रशिक्षण इकाई का शिलान्यास एवं किसानों के लिए आयोजित वैज्ञानिक संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए कहा कि देश के अन्दर सबसे उर्वरा भूमि पूर्वी उत्तर प्रदेश की है। जल की प्रचुरता एवं उपजाऊ होने के बावजूद यहां का किसान विपन्न है। जागरूकता एवं वैज्ञानिक जानकारी के अभाव में आज भी वह प्राचीन पद्धति से ही खेती करता है। इसका परिणाम यह है कि जहाँ पश्चिमी उत्तर प्रदेश का किसान प्रति हेक्टेयर 75 से 100 टन गन्ने का उत्पादन करता है। वहीं यहां का किसान बमुश्किल 50 से 60 टन गन्ने का उत्पादन कर पाता है, जबकि गन्ना उत्पादन की दृष्टि से यह क्षेत्र और यहाँ की जलवायु अत्यन्त उपयोगी है। गोरखपुर-बस्ती मंडल में कभी 31 चीनी मिलें चलती थी लेकिन आज 10 ही चीनी मिलंे चल पा रही हैं। उन पर भी गन्ना किसानों का करोड़ांे रूपया बकाया है। खेती में कम उत्पादन, चीनी मिलो की बंदी एवं गन्ना मूल्य का भुगतान न होने के कारण यहां का किसान गन्ने की खेती से विमुख हुआ। माननीय विधायक कैम्पियरगंज (गोरखपुर) श्री फतेह बहादुर सिंह ने इकाई स्थापित कराने के लिए सांसद योगी श्री आदित्य नाथ जी का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि इससे किसानों के नगदी फसल के दिन वापिस आयेंगे। भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ के निदेशक डा. ए.डी. पाठक ने कहा कि पूर्वी उत्तर प्रदेश मंे गन्ने को कच्चे माल के रूप में प्रयोग करके चीनी, खांडसारी एवं गुड़ का उत्पादन किया जाता है। सामान्यतया कुल उत्पादित गन्ने का 70 प्रतिशत हिस्सा चीनी उत्पादन के लिए, 19 प्रतिशत खांडसारी एवं गुड उत्पादन के लिए तथा 10-11 प्रतिशत भाग बोवाई एवं चूसने के लिए प्रयोग किया जाता हैं। ऐसी स्थिति मंे जब चीनी मिले उत्पादित गन्ने को पेरने में सक्षम नहीं हो पाती तो किसानों को अपनी फसल एवं आय को सुरक्षित रखने के लिए गुड़ बनाना एक अच्छा विकल्प हो सकता है। इससे किसान अच्छा मुनाफा भी कमा सकते हैं। गुड प्रसंस्करण एवं प्रशिक्षण इकाई की स्थापना इसी मकसद से की जा रही है। भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ शीघ्र ही कुशीनगर एवं बस्ती मंे भी इस प्रकार के केन्द्र स्थापित करेगी।

कृृषि विज्ञान केन्द्र, भाकृअनुप- भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ के प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख, डा. एस.एन. सिंह ने कहा कि गुड़ मिठास के अतिरिक्त खाद्य पदार्थ भी है क्योंकि इसमें शरीर के लिए आवश्यक पोषक तत्वों जैसे ग्लूकोज, फ्रक्टोज, आयरन, कैल्शियम, फास्फोरस, प्रोटिन आदि प्रचुर मात्रा में होता है। उत्तम किस्म का गुड़ बना कर एवं अच्छी पैकेजिंग करके किसानों की आय को बढ़ाने का महत्वपूर्ण स्रोत हो सकती है। कार्यक्रम में भारतीय जनता पार्टी के क्षेत्रीय मंत्री डा. धर्मेन्द्र सिंह , हिन्दू युवा वाहिनी के जिला संयोजक रमाकांत निषाद, जिला महामंत्री विजय शंकर यादव, ग्राम प्रधान महेन्द्र मिश्र, मधुसूदन मिश्र, मृत्युंजय सिंह, ई पी.के. मल्ल, डा. राकेश कुमार सिंह आदि मौजूद थे।

योगी आदित्यनाथ जी

दिनांक : 21 दिसम्बर 2016, पूर्वाह्न 10:30
गोरक्षपीठाधीश्वर पूज्य महन्त योगी
जी महाराज
आपका हार्दिक
एवं अभिनन्दन
निवेदक – भारतीय

महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र
गुड़ प्रसंस्करण एवं प्रशिक्षण इकाई का शिलान्यास
एवं
आपका हार्दिक स्वागत एवं
गोरखपुर